संसदीय क्षेत्र कोटा-बूंदी में कृषि महोत्सव प्रदर्शनी और प्रशिक्षण मेले के समापन समारोह में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का संबोधन

किसान महोत्सव में हमारे बीच पधारे भारत सरकार के किसान कल्याण मंत्री, जिन्होंने परम्परागत खेती के साथ आधुनिक खेती करने के लिए एक नयी दिशा दी। इस देश के किसानों को कैसे आर्थिक रूप से सशक्त किया जाए, मजबूत किया जाए, यदि हिन्दुस्तान में आत्मनिर्भर भारत की नींव रखनी है, तो वह हम केवल किसान साथियों के बलबूते पर ही रख सकते हैं।

मैं विशेष रूप से, माननीय श्री तोमर साहब को धन्यवाद दूँगा क्योंकि दिल्ली के बाद यहाँ पर पहली बार किसान महोत्सव प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में, उन्होंने किसान महोत्सव का आयोजन कराया है। मैंने उनसे आग्रह किया था और उन्होंने मुझसे कहा कि निश्चित रूप से, हाड़ोती एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ पर्याप्त मात्रा में पानी है। चूंकि श्री तोमर साहब भी चम्बल नदि की घाटियों से आते हैं और मुरैना लोक सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्होंने ग्वालियर संसदीय क्षेत्र का भी प्रतिनिधित्व किया है और ये चम्बल नदी की महत्ता को जानते हैं। चाहे चम्बल, पार्वती, काली सिन्ध नदियाँ हों, इन नदियों का पानी और यहाँ की उपजाऊ मिट्टी से देश के किसानों की आर्थिक प्रगति में, आधुनिक खेती और नवाचार का उपयोग करके हाड़ोती के किसान एक नया इतिहास लिख सकते हैं।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में आपने देखा होगा कि किस तरह से, यहाँ के किसानों को जैविक खेती के बारे में, परम्परागत खेती के बारे में और इसके साथ-साथ नवाचार करके आधुनिक खेती के माध्यम से, कम लागत में ज्यादा उत्पादन, गुणवत्तापूर्ण उत्पादन और उसका वैल्यू एडिशन करके देश के किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं। इसलिए जब आप इस दो दिवसीय महोत्सव में जाएंगे, जब आप स्टॉल पर देखेंगे,

तो पता चलेगा कि भारत ने किस तरीके से, नवाचार किया है। हमारे नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, उनकी नयी सोच, नया चिन्तन, इनोवेशन और रिसर्च के माध्यम से स्टार्ट-अप्स शुरू करके किसान की उपज को बढ़ाने का काम किया है, उसका वैल्यू एडिशन करने का काम किया है।

प्रदर्शनी में मैंने देखा है कि किस तरीके से, उन्होंने किसानों की दालें, मोटे अनाज, जड़ी-बूटियों आदि हरेक छोटी-छोटी चीजों का उपयोग करके, उसका वैल्यू एडिशन करके किस तरह से किसानों की आमदनी को बढ़ाने का काम किया है। किसानों के इन्हीं स्टार्ट-अप्स के माध्यम से, नवाचारों के माध्यम से हाड़ोती के किसानों की जिन्दगी को हम बेहतर करने का काम करेंगे। हम लोग परम्परागत खेती करते हैं, लेकिन इसके साथ-साथ हमें नयी टेक्नोलॉजी का भी उपयोग करना पड़ेगा, नवाचारों का उपयोग करना पड़ेगा।

हमारी लागत को कम करने के लिए जो नए इनोवेशन्स हुए हैं, उनका हमें उपयोग करना पड़ेगा। अभी किसान कुछ हिचकता है। किसानों के लिए बदलाव करना बहुत मुश्किल और कठिन काम होता है, लेकिन मुझे हाड़ौती के किसानों पर विश्वास है। बदलाव होगा, तो इसी हाड़ौती की धरती से होगा और ये बदलाव किसान भाई करके दिखाएंगे। इसलिए, हमें खेती के नए तरीकों में बदलाव करना है। अब किसान का बेटा किसी सेठ-साहूकार की नौकरी नहीं करेगा। अब किसान का बेटा गांव के अंदर रहकर उस खेती को मुनाफे का व्यापार-उद्योग बनाकर दुनिया को बताने का काम करेगा।

मेरा यही सपना है। जब मैं गांव में जाता हूं, तो पढ़े-लिखे किसानों के परिवारों के नौजवान युवाओं को देखता हूं। मैं उनसे एक ही सवाल करता हूं। क्यों नहीं दुनिया और देश में जो परिवर्तन हो रहे हैं, उस परिवर्तन को हम अपने खेतों में करके दिखाएं? अगर उसके परिणाम ठीक आते हैं, अगर उसके रिजल्ट्स ठीक आते हैं, तो उन परिणामों और रिजल्ट्स को देखने के बाद किसान उन्हें दूसरी खेती में करेगा। आप हाड़ौती के आसपास के कई गांवों के अंदर चले जाइए। लोगों ने अमरूद लगाने का काम किया, नींबू लगाने का काम

किया। आप भवानी मंडी के आसपास के इलाके में चले जाइए, तो वहां का संतरा नागपुर के संतरे से भी बढ़िया होता है।

ऐसी कई सारी चीजें हैं। हम इनका कैसे उपयोग कर सकते हैं? मुझसे कई किसान कहते हैं कि हम एक बीघे के अंदर 30-40 हजार रुपए अमरूद के खेती से कमाते हैं। मुझे विश्वास नहीं होता है, लेकिन मैंने खेत में जाकर देखा है कि किस तरीके से अमरूद उगाकर, जो साधारण खेती थी, उसकी नई क्वालिटी के आधार पर, उसमें कितना परिवर्तन हुआ है। कल मैंने बिना बीज के छोटे नींबू को देखा। उस बिना बीज के नींबू का साइज देखकर मुझे लगा कि किसान ऐसे अमरूद, आम लगा सकता है। आपने बहुत तरह के आम देखे होंगे। गिरधरपुरा का किसान दुनिया के अंदर अपने आम को बेचता है। वे नींबू के पेड़, जो 50 रुपए में आते हैं, आप उनकी चिंता मत कीजिए। मैंने पिछली बार भी कहा था हर विधान सभा में एक लाख पौधे आपको जन-सहयोग से दिलाएंगे, आप उन पौधों को लेकर काम कीजिए।

आप मेढ़ पर फसल के साथ-साथ फलोद्यान करने का काम कीजिए। उस फल का उपयोग, यहां प्रदर्शनी में आप देखेंगे कि किस तरीके से आंवले से बहुत का उपयोग करने का काम किया है। नींबू का बहुत सारा उपयोग किया गया है। हमारे यहां जामुन बहुत होता है। जामुन की गुठली का उपयोग, जामुन का खुद का उपयोग और उसके बाद कम से कम एक हजार दिनों तक उन जामुनों से निकाले हुए रस को प्रिजर्व करने का काम यहां किया गया है। केशवरायपाटन में प्लांट लगने वाला है, बूंदी में प्लांट लगने वाला है। हम सब्जी का बड़ा उत्पादन केंद्र हाड़ौती को बना सकते हैं। आने वाले समय के अंदर कोटा से मुंबई आठ घंटे, कोटा से दिल्ली साढे-चार घंटे, कोटा से ग्वालियर तीन घंटे, कोटा से मुरैना ढाई घंटे और कोटा से इलाहाबाद तक सात घंटे के अंदर किसान अपनी आमदनी को बेच सकते हैं।

प्रधान मंत्री जी ने किसान रेल चलाई। किसान रेल एयर-कंडीशंड है, वह चलता-फिरता कोल्ड स्टोरेज है, जिसके माध्यम से आप आने वाले समय में आप इतनी सब्जी का उत्पादन करने लग जाएंगे, इतने दूध का उत्पादन करने लग जाएंगे कि कोटा से दिल्ली, कोटा से मुंबई कोल्ड स्टोरेज के रूप में रेल चले और हाड़ौती के किसानों की जिंदगी को बदलने का काम करे।

हमें किसान खेती के अंदर, किसान खेती के साथ फलोद्यान के अंदर, फलोद्यान के साथ जड़ी-बूटियों के अंदर अपने उत्पादन को बढ़ाना है। तोमर साहब, हम अभी जब आ रहे थे, तो कई लोगों ने प्रदर्शनी के अंदर इसे दिखाया है। हमने कहा कि यह क्या है? उन्होंने बताया कि हर जड़ी-बूटी के अलग-अलग उपयोग हैं और दुनिया के अंदर उनकी मांग है। हमें हर जड़ी-बूटी का उपयोग करना है, हमें नई जड़ी-बूटियां भी उपयोग में लानी हैं। आने वाला समय दुनिया के अंदर आयुर्वेद का होगा और आयुर्वेद के माध्यम से जड़ी-बूटियों से बनी दवाएं ही बिना साइड-इफेक्ट्स के आधार पर लोगों का इलाज करने का काम करेंगी।

मेरा आपसे आग्रह है कि आप दो दिनों तक यहां बात करें। किसान पेस्टीसाइड्स का ज्यादा उपयोग न करें। किसान कम फर्टिलाइजर का उपयोग करें। हमें मिट्टी बचानी है। यह मिट्टी हमारी धरती माँ है। हमारी पीढ़ियों तक मिट्टी का संरक्षण रहे, इसकी जिम्मेदारी हम सभी की है। मिट्टी का बचाव कैसे हो सकता है, इस बारे में यहां चर्चा करें और मिट्टी की जांच के बाद जितनी आवश्यकता हो, उतना फर्टिलाइजर का उपयोग करें। मैंने दोनों फर्टिलाइजर कम्पनीज से बात की है और एग्रीकल्चर विभाग से भी बात की है। हर खेत की मिट्टी की जांच होगी, चलती-फिरती जांच करने का वाहन हर गांव में पहुंचेगा। मिट्टी की गुणवत्ता की जांच होगी और उसके आधार पर आप फर्टिलाइजर का उपयोग करें। यहां पानी चम्बल नदी के कारण बहुत ज्यादा है। ऐसा नहीं है कि पानी का ज्यादा उपयोग करने से ज्यादा उत्पादन हो। कम पानी का उपयोग होना चाहिए। ड्रोन से कम पानी का उपयोग होता है। यदि खेती में कोई बीमारी लग जाती है तो उसे ड्रोन देखेगा और

यह ड्रोन उसी पट्टी पर जहां दवाई डालने की आवश्यकता होगी, उसी जगह पेस्टीसाइड डालने का काम ड्रोन करेगा। पूरे खेत में पेस्टीसाइड डालने की आवश्यकता नहीं होगी। दुनिया बदल गई है और हमें भी बदलना पड़ेगा। ऐसा न हो कि खेत के किसी एक हिस्से में बीमारी लग जाए और हमें पूरे खेत में फर्टिलाइजर डालना पड़े।

आने वाले समय में आप सभी साथ खड़े रहें, इस बार एक तहसील में एक ड्रोन देंगे और आने वाले समय में हर पंचायत में एक ड्रोन किसानों के पास रहेगा और वह ड्रोन खेती की जांच करेगा और उसी जगह पेस्टीसाइड डालेगा, जहां बीमारी लगी है। पेस्टीसाइड के कारण जो लोग बीमार होते थे, उनकी मृत्यु होती थी, वह हमारे लिए बहुत चिंता का विषय है इसलिए मैं पुन: आज माननीय तोमर साहब को विशेष रूप से धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने हड़ौती से एक बहुत अच्छी शुरूआत की है। किसान की समृद्धि और खुशहाली के लिए, उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए बहुत अच्छा काम किया है। हमारा यही सपना है कि जब तक देश का किसान आर्थिक रूप से मजबूत नहीं होगा, तब तक हम भारत के आर्थिक तंत्र को बदल नहीं सकते हैं। भारत में जब भी कुछ बदला है, तो भारत के किसानों ने बदला है, भारत के नौजवानों ने बदला है और भारत के किसान ही नए आर्थिक युग की शुरूआत कर सकते हैं। नए भारत और आत्मनिर्भर भारत की ताकत भारत का किसान है, हाड़ौती का किसान है और यह हम सभी को करके दिखाना है।